Unique Paper Code	:	121301203(LOCF)
Title of the Paper	:	CC- Sāhitya: Meghadūta & Uttararāmacarita
Name of the Course	:	M.A. Sanskrit, (LOCF) Examination –Aug 2022
Semester	:	II
Duration	:	3 Hours
Maximum Marks	:	70

इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमाङ्क लिखिए।

(Write Your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

टिप्पणी: अन्यथा आवश्यक न होने पर इस प्रश्नपत्र का उत्तर संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में दीजिए।

Note: Unless otherwise required in a question, answers should be written either in Sanskrit or in Hindi or in English.

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

Attempt all questions.

1. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए–: 4X7=28

Explain the following :

(i) आपृच्छस्व प्रियसखममुं तुङ्गमालिङ्ग्य शैलं
वन्द्यैः पुंसां रघुपतिपदैरङ्कितं मेखलासु ।
काले काले भवति भवतो यस्य संयोगमेत्य
स्नेहव्यक्तिश्चिरविरहजं मुञ्चतो वाष्पमुष्णम् ॥

अथवा (or)

तस्यास्तिक्तैर्वनगजमदैर्वासितं वान्तवृष्टिः
जम्बूकुञ्जप्रतिहतरयं तोयमादाय गच्छेः ।
अन्तःसारं घन तुलयितुं नानिलः शक्ष्यति त्वां
रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय ॥

(ii) मन्दाकिन्याः सलिलशिशिरैः सेव्यमाना मरुद्भिः
मन्दाराणामनुतटरुहां छायया वारितोष्णाः ।
अन्वेष्टव्यैः कनकसिकतमुष्टिनिक्षेपगूढैः
संक्रीडन्ते मणिभिरमरप्रार्थिता यत्र कन्याः ॥

अथवा (or)

एभिः साधो हृदयनिहितैर्लक्षणैर्लक्षयेथा
द्वारोपान्ते लिखितवपुषौ शङ्खपद्मौ च दृष्ट्वा ।
क्षामच्छायं भवनमधुना मद्वियोगेन नूनं
सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम् ॥

(iii) तत्कालं प्रियजनविप्रयोगजन्मा
तीव्रोऽपि प्रतिकृतिवाञ्छया विसोढः ।
दुःखाग्निर्मनसि पुनर्विपच्यमानो
न्मर्मव्रण इव वेदनां तनोति ॥

अथवा (or)

वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे
न तु खलु तयोर्ज्ञाने शक्तिं करोत्यपहन्ति वा ।
भवति हि पुनर्भूयान् भेदः फलं प्रति, तद्यथा
प्रभवति शुचिर्बिम्बग्राहे मणिर्न मृदादयः ॥

(iv) विद्याकल्पेन मरुता मेघानां भूयसामपि ।
ब्रह्मणीव विवर्तानां क्वापि प्रविलयः कृतः ॥

अथवा (or)

क्षुभिताः कामपि दशां कुर्वन्ति मम संप्रति ।
विस्मयानन्दसंदर्भजर्जराः करुणोर्मयः ॥

2. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिये, जिनमें से एक संस्कृत में होनी चाहिये: 5+5+5+07=22

Write short notes on the following in which one must be in Sanskrit:

I. यक्ष का व्यक्तित्व (Persona of Yaksha)

अथवा (or)

यक्ष की शिव के प्रति भक्ति (Devotion of Yaksha towards Lord Shiva)

II. मेघदूत में आशावाद (Optimism in Meghadūta)

अथवा (or)

मेघदूत में अन्तःप्रकृति (Intranal nature in Meghadūta)

III. यक्षसन्देश का श्रोतपेयत्व (Sweetness of the massage of yakṣa

अथवा (or)

उत्तररामचरित में विष्कम्भक (Viṣkambhaka in Uttararāmacarita)

IV. उत्तररामचरित के द्वितीय अंक का नाटकीय महत्त्व

(Dramatical significance of the second act of Uttararāmacarita)

अथवा (or)

लव का कौशल्या–जनक से संवाद (Dialogue of Lava with Kauślyā and Janaka)

3. निम्नलिखित प्रश्नों की समीक्षात्मक विवेचना कीजिए:- 2X10=20

Critically Analyse the following questions:

I. यक्षनिर्दिष्ट मेघमार्ग (Rout of cloud as indicated by yaksha in Meghadūta)

अथवा (or)

अलकानगरी का वैभव (Glory of Alaka-nagari)

II. उत्तररामचरित में चित्रदर्शन का नाटकीय महत्त्व

Dramatical significance of scene of the Photo- gallery in Uttararāmacarita

अथवा (or)

उत्तररामचरित के अनुसार लव और चन्द्रकेतु का चरित्राङ्कन

Characteristics of Lava and Candraketu as per the Uttararāmacarita